॥ चन्द्र ग्रह मंत्र, जप, कवच, स्तोत्र ॥

अनुक्रमाणिका

चन्द्र यन्त्रम्

नागद्विनन्दा गजषट् समुद्रा
शिवाक्षिदिग्वाणविलिख्य कोष्ठे ।
चन्द्रकृतारिष्ट विनाशनाय
धार्यं मनुष्यैः शशियन्त्रमीरितम् ॥

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

॥ चन्द्र देव ग्रह ॥

चन्द्रमा यमुना नदी से उद्भव। आत्रि गोत्र। जाति वैश्य। शुक्ल वर्ण। दक्ष प्रजापति की 27 कन्याओं से विवाह। 27 कन्यायें 27 नक्षत्रों के नाम से जानी जाती है।

- **शुभाशुभत्व** — **शुभ ग्रह**
- **भोग काल** — **2.25 दिन (सवा दो दिन)**
- **बीज मंत्र** — **ॐ सों सोमाय नमः।**
  - **ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।**
  - **ॐ चन्द्राय नमः।**
- **तांत्रिक मंत्र** — **ॐ श्राँ श्रीं श्रौं स: चंद्राय नमः।**
  - **सौं।** — एकाक्षर मन्त्र
  - **वं सं वं** — त्र्यक्षर मन्त्र
- **कालीपटले** — **ॐ श्रीं क्रीं ह्रां चं चन्द्राय नमः।**
- **वैदिक मंत्र** — **ॐ इमं देवा असपत्न ७ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ७ राजा॥**
- **पुराणोक्त मंत्र** — **ॐ दधि शंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव सम्भवम। नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुट भूषणं॥**
- **अधिदेवता-उमाम्** — **ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम ईष्णन्नीषाण मुम्मीषाण सर्वलोकम्मीषाण॥**
- **प्रत्यधिदेवता-आप:** — **ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्ता न ऽ ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे।**
- **जप संख्या** — **11,000 कलयुगे चतुर्थगुणो अर्थात 44,000**

+ दशांश हवन	4,400	
+ दशांश तर्पण	440	
+ दशांश मार्जन	44 =	48,884

- **जप समय** — **संध्याकाल**
- **हवनवस्तु** — **पलाश**
- **रत्न** — **मोती - 10 रत्ती, सोमवार, आग्नेय दिशा, चंद्रोदित रात्रि, कनिष्ठिका**

- **चन्द्रमा प्रार्थना** **ॐ श्वेताम्बरः श्वेतविभूषणश्च, श्वेतद्युतिर्दण्डधरो द्विबाहुः।**
चन्द्रोऽमृतात्मा वरदः किरीटी, श्रेयांसि मह्यं विदधातु देव॥
    - हे चन्द्रदेव! आप श्वेत वस्त्र तथा श्वेत आभूषण धारण करने वाले हैं। आपके शरीर की कान्ति श्वेत है। आप दण्ड धारण करते हैं, आपके दो हाथ हैं, आप अमृतात्मा हैं, वरदान देने वाले हैं तथा मुकुट धारण करते हैं, आप मुझे कल्याण प्रदान करें।

- **चन्द्रमा का व्रत** ५४ सोमवारों तक या १० सोमवारों तक करना चहिये। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण कर **'ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः'** इस मन्त्र का ११, ५ अथवा ३ माला जप करे। भोजन में बिना नमक के दही, दूध, चावल, चीनी और घी से बनी चीजें ही खाये। इस व्रत को करने से व्यापार में लाभ होता है। मानसिक कष्टों की शान्ति होती है। विशेष कार्य सिद्धि में यह व्रत पूर्ण लाभ दायक होता है।

- **अनिष्टे चन्द्रे शान्ति स्नानम्**
    - **सपञ्चगव्यैः स्फटिकेभदान, त्रिपत्रमुक्ताम्बुजशुक्तिशङ्खैः।**
    तुषारभास्याप्लवनं नृपाणा, मुक्तं हि तुष्टयै विषमे ग्रहज्ञैः॥
    - चन्द्रमा की अनिष्ट-शान्ति के लिये पंचगव्य, स्फटिक, गजमद, बिल्व, मुक्ता, कमल, मोती की सीप और शंख से स्नान करना चाहिये।

- **चन्द्रमा दान** **घृत कलशं सितवस्त्रं दधिशङ्कं मौक्तिकं सुवर्णं च।**
रजतं च प्रदद्याच्चन्द्रारिष्टोपशान्तये त्वरितम्॥
    - **ॐ सद्वंशपात्र स्थिततण्डुलांश्च कर्पूरमुक्ताफलशुभ्र वस्त्रम्।**
    युगापयुक्तं वृषभं च रौप्यं चन्द्राय दद्याद् घृतपूर्णकुंभम्॥
    - चन्द्रमा की प्रीति के लिये घृत कलश, श्वेत वस्त्र, दही, शंख, मोती, स्वर्ण तथा चाँदी का दान करना चाहिये।
    - चन्द्रमा की अनुकूलता के लिये श्री खण्ड चन्दन का दान करना चाहिये।
    - चावल, कपुर, चाँदी शंख, सफेद पुष्प, सफेद वस्त्र, सफेद बैल

॥ चन्द्र वैदिक मन्त्र न्यासादि प्रयोगः ॥

- **वैदिक मंत्र** — **ॐ इमं देवा असपत्न ७ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ७ राजा ॥**

- **विनियोग:** — ॐ इमं देवा इति मन्त्रस्य गौतम ऋषिः । द्विपदाविराट् छन्दः । सोमो देवता । असपत्नमिति बीजम् । सोमप्रीत्यर्थे जपे विनियोग: ॥

- **ऋष्यादि न्यास** — ॐ गौतम ऋषये नमः शिरसि । ॐ द्विपदा विराट् छन्दसे नमः मुखे ।
ॐ सोमदेवतायै नमः हृदि । ॐ असपत्न बीजाय नमः गुह्ये ।
ॐ सोम प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नम: सर्वाङ्गे ॥

- **करन्यास** — ॐ इमं देवाऽ असपत्न ७ सुवध्वमित्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ महतेक्षत्रायेति तर्जनीभ्यां नमः । ॐ महतेज्यैष्ठयायेति मध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ महते जानराज्यायेन्द्रियायेत्यनामिकाभ्यां नमः । ॐ इमममुष्यपुत्रममुष्यै इति कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ पुत्रमस्यै विवशऽएषवो मीराजासोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ७ राजेति करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ॥

- **हृदयादिन्यास** — ॐ इमन्देवाऽअसपत्न ७ सुवध्वमिति हृदयाय नमः । ॐ महते क्षत्रायेति शिरसे स्वाहा । ॐ महतेज्ज्यैष्ठयायेति शिखायै वषट् । ॐ महते जानराज्यायेंद्रस्येंद्रियायेति कवचायहुम् । ॐ इमममुष्यपुत्र ममुष्यै इति नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ पुत्रमस्यै विवशऽएष वोमीराजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ७ राजा इत्यस्त्राय फट् ॥

- **मन्त्रन्यासः** — ॐ इमं देवा इति शिरसि । ॐ असपत्नमिति ललाटे । ॐ सुवध्वमिति नासिकायाम् । ॐ महते क्षत्रायेति मुखे । ॐ महते ज्न्यैष्ठ्यायेति कंठे ।
ॐ महतजानराज्यायेंद्रस्येद्रि यायेति हृदये । इमममुष्येति नाभौ ।
ॐ पुत्रममुष्यै कट्याम् । ॐ पुत्रमस्यै इति जंघयोः ।
ॐ विशऽएषवोमीरा जासोमंस्माकंब्राह्मणाना ७ राजेति पादयो: ॥

॥ चन्द्र कवचम् ॥

- **विनियोग** अस्य श्री चंद्र कवच स्तोत्र महा मंत्रस्य । गौतम ऋषि: । अनुष्टुप छंद: । श्री चंद्रो देवता । चंद्र: प्रीत्यर्थे जपे विनियोग: ॥

- **समं चतुर्भुजं वंदे केयूर मकुटोज्वलम् ।**
  वासुदेवस्य नयनं शंकरस्य च भूषणम् ॥ ॥ १ ॥

- **एवं ध्यात्वा जपेन्नित्यं शशिन: कवचं शुभम् ।**
  शशि: पातु शिरो देशं भालं पातु कलानिधि ॥ ॥ २ ॥

- **चक्षुषी: चंद्रमा: पातु श्रुती पातु निशापति: ।**
  प्राणं कृपाकर: पातु मुखं कुमुदबांधव: ॥ ॥ ३ ॥

- **पातु कण्ठं च मे सोम: स्कंधौ जैवा तृकस्तथा ।**
  करौ सुधाकर: पातु वक्ष: पातु निशाकर: ॥ ॥ ४ ॥

- **हृदयं पातु मे चंद्रो नाभिं शंकरभूषण: ।**
  मध्यं पातु सुरश्रेष्ठ: कटिं पातु सुधाकर: ॥ ॥ ५ ॥

- **ऊरू तारापति: पातु मृगांको जानुनी सदा ।**
  अब्दिज: पातु मे जंघे पातु पादौ विधु: सदा ॥ ॥ ६ ॥

- **सर्वाण्यन्यानि चांगानि पातु चंद्रोऽखिलं वपु: ।**
  ऐतद्धि कवचं दिव्यं भुक्ति मुक्ति प्रदायकम् ।
  य: पठेत च्छृणुयाद्वापि सर्वत्र विजयी भवेत ॥ ॥ ७ ॥

॥ इती श्री चन्द्र कवचम् सम्पूर्णम् ॥

॥ चन्द्र स्तोत्रम् ॥

- श्वेताम्बर: श्वेतवपु: किरीटी, श्वेतद्युतिर्दण्डधरो द्विबाहु: ।
  चन्द्रो मृतात्मा वरद: शशांक:, श्रेयांसि मह्यं प्रददातु देव: ॥ १ ॥

- दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम ।
  नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम ॥ ॥ २ ॥

- क्षीरसिन्धुसमुत्पन्नो रोहिणी सहित: प्रभु: ।
  हरस्य मुकुटावास: बालचन्द्र नमोऽस्तु ते ॥ ॥ ३ ॥

- सुधायया यत्किरणा: पोषयन्त्योषधीवनम ।
  सर्वान्नरसहेतुं तं नमामि सिन्धुनन्दनम ॥ ॥ ४ ॥

- राकेशं तारकेशं च रोहिणीप्रियसुन्दरम ।
  ध्यायतां सर्वदोषघ्नं नमामीन्दुं मुहुर्मुहु: ॥ ॥ ५ ॥

॥ इति मन्त्र महार्णवे चन्द्रमस: स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

॥ चन्द्र अष्टाविंशति नाम स्तोत्रम् ॥

- **विनियोग** अस्य श्री चंद्र स्याष्टाविंशति नाम स्तोत्रस्य । गौतम ऋषि: । विराट् छंद: । श्री चन्द्रो देवता । चंद्रस्य प्रीत्यर्थे पाठे विनियोग: ॥

- **ऋष्यादि न्यास** शिरसि श्री गौतम ऋषये नम: । मुखे विराट् छंदसे नम: । हृदि श्री चन्द्रे देवतायै नमः । सर्वांगे श्री चन्द्र प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगाय नम: ॥

- **चन्द्रस्य शृणु नामानि शुभदानि महीपते ।**
  यानि श्रुत्वा नरो दु:खान्मुच्यते नात्र संशय: ॥ ॥ १ ॥

- **सुधाकरश्च सोमश्च ग्लौरब्ज: कुमुदप्रिय: ।**
  लोकप्रिय: शुभ्रभानुश्चन्द्रमा रोहिणीपति ॥ ॥ २ ॥

- **शशी हिमकरो राजा द्विजराजो निशाकर: ।**
  आत्रेय इन्दु: शीतांशुरोषधीश: कलानिधि: ॥ ॥ ३ ॥

- **जैवातृको रमाभ्राता क्षीरोदार्णव संभव: ।**
  नक्षत्रनायक: शंभु: शिरश्चूडामणिर्विभु: ॥ ॥ ४ ॥

- **तापहर्ता नभोदीपो नामान्येतानि य: पठेत् ।**
  प्रत्यहं भक्तिसंयुक्तस्तस्य पीडा विनश्यति ॥ ॥ ५ ॥

- **तद्दिने च पठेद्यस्तु लभेत् सर्वं समीहितम् ।**
  ग्रहादीनां च सर्वेषां भवेच्चन्द्रबलं सदा ॥ ॥ ६ ॥

॥ इति श्री चंद्राष्टाविंशतिनाम स्तोत्रम् संपूर्णम् ॥

॥ श्री चन्द्र अष्टोत्तरशत नामावली ॥

1. ॐ श्रीमते नमः।
2. ॐ शशधराय नमः।
3. ॐ चन्द्राय नमः।
4. ॐ ताराधीशाय नमः।
5. ॐ निशाकराय नमः।
6. ॐ सुधानिधये नमः।
7. ॐ सदाराध्याय नमः।
8. ॐ सत्पतये नमः।
9. ॐ साधुपूजिताय नमः।
10. ॐ जितेन्द्रियाय नमः।
11. ॐ जयोद्योगाय नमः।
12. ॐ ज्योतिश्चक्रप्रवर्तकाय नमः।
13. ॐ विकर्तनानुजाय नमः।
14. ॐ वीराय नमः।
15. ॐ विश्वेशाय नमः।
16. ॐ विदुषां पतये नमः।
17. ॐ दोषाकराय नमः।
18. ॐ दुष्टदूराय नमः।
19. ॐ पुष्टिमते नमः।
20. ॐ शिष्टपालकाय नमः।
21. ॐ अष्टमूर्तिप्रियाय नमः।
22. ॐ अनन्ताय नमः।
23. ॐ कष्टदारुकुठारकाय नमः।
24. ॐ स्वप्रकाशाय नमः।
25. ॐ प्रकाशात्मने नमः।
26. ॐ द्युचराय नमः।
27. ॐ देवभोजनाय नमः।
28. ॐ कलाधराय नमः।
29. ॐ कालहेतवे नमः।
30. ॐ कामकृते नमः।
31. ॐ कामदायकाय नमः।
32. ॐ मृत्युसंहारकाय नमः।
33. ॐ अमर्त्याय नमः।
34. ॐ नित्यानुष्ठानदाय नमः।
35. ॐ क्षपाकराय नमः।
36. ॐ क्षीणपापाय नमः।
37. ॐ क्षयवृद्धिसमन्विताय नमः।
38. ॐ जैवातृकाय नमः।
39. ॐ शुचये नमः।
40. ॐ शुभ्राय नमः।
41. ॐ जयिने नमः।
42. ॐ जयफलप्रदाय नमः।
43. ॐ सुधामयाय नमः।
44. ॐ सुरस्वामिने नमः।
45. ॐ भक्तानामिष्टदायकाय नमः।
46. ॐ भुक्तिदाय नमः।
47. ॐ मुक्तिदाय नमः।
48. ॐ भद्राय नमः।
49. ॐ भक्तदारिद्र्यभञ्जनाय नमः।
50. ॐ सामगानप्रियाय नमः।
51. ॐ सर्वरक्षकाय नमः।
52. ॐ सागरोद्भवाय नमः।
53. ॐ भयान्तकृते नमः।
54. ॐ भक्तिगम्याय नमः।
55. ॐ भवबन्धविमोचकाय नमः।
56. ॐ जगत्प्रकाशकिरणाय नमः।
57. ॐ जगदानन्दकारणाय नमः।
58. ॐ निस्सपत्नाय नमः।
59. ॐ निराहाराय नमः।
60. ॐ निर्विकाराय नमः।
61. ॐ निरामयाय नमः।
62. ॐ भूच्छायाच्छादिताय नमः।
63. ॐ भव्याय नमः।
64. ॐ भुवनप्रतिपालकाय नमः।
65. ॐ सकलार्तिहराय नमः।
66. ॐ सौम्यजनकाय नमः।
67. ॐ साधुवन्दिताय नमः।
68. ॐ सर्वागमज्ञाय नमः।
69. ॐ सर्वज्ञाय नमः।
70. ॐ सनकादिमुनिस्तुताय नमः।
71. ॐ सितच्छत्रध्वजोपेताय नमः।
72. ॐ सिताङ्गाय नमः।
73. ॐ सितभूषणाय नमः।
74. ॐ श्वेतमाल्याम्बरधराय नमः।
75. ॐ श्वेतगन्धानुलेपनाय नमः।
76. ॐ दशाश्वरथसंरूढाय नमः।
77. ॐ दण्डपाणये नमः।
78. ॐ धनुर्धराय नमः।
79. ॐ कुन्दपुष्पोज्ज्वलाकाराय नमः।
80. ॐ नयनाब्जसमुद्भवाय नमः।
81. ॐ आत्रेयगोत्रजाय नमः।
82. ॐ अत्यन्तविनयाय नमः।
83. ॐ प्रियदायकाय नमः।
84. ॐ करुणारससम्पूर्णाय नमः।
85. ॐ कर्कटप्रभवे नमः।
86. ॐ अव्ययाय नमः।
87. ॐ चतुरश्रासनारूढाय नमः।
88. ॐ चतुराय नमः।
89. ॐ दिव्यवाहनाय नमः।
90. ॐ विवस्वन्मण्डलाज्ञेयवासाय नमः।
91. ॐ वसुसमृद्धिदाय नमः।
92. ॐ महेश्वरप्रियाय नमः।
93. ॐ दान्ताय नमः।
94. ॐ मेरुगोत्रप्रदक्षिणाय नमः।
95. ॐ ग्रहमण्डलमध्यस्थाय नमः।
96. ॐ ग्रसितार्काय नमः।
97. ॐ ग्रहाधिपाय नमः।
98. ॐ द्विजराजाय नमः।
99. ॐ द्युतिलकाय नमः।
100. ॐ द्विभुजाय नमः।
101. ॐ द्विजपूजिताय नमः।
102. ॐ औदुम्बरनगावासाय नमः।
103. ॐ उदाराय नमः।
104. ॐ रोहिणीपतये नमः।
105. ॐ नित्योदयाय नमः।
106. ॐ मुनिस्तुत्याय नमः।
107. ॐ नित्यानन्दफलप्रदाय नमः।
108. ॐ सकलाह्लादनकराय नमः।
109. ॐ पलाशसमिधप्रियाय नमः।
110. ॐ चन्द्रमसे नमः।

॥ इति श्री चन्द्र अष्टोत्तरशत नामावली सम्पूर्णम ॥